Success Stories

of

Integrated Watershed Development Projects

By :-

Distt. Rural Dev. Agency, Chamba (H.P)

पृष्ठ भूमि :-

पूर्व की सिंचाई योजना पूर्णतयाः वर्षा जल पर निर्भर थी । कुछेक स्थलों पर लिफ्ट सिंचाई योजना द्वारा पानी का प्रयोग होता था तथा कई व्यक्तिगत पम्प सेटों (किरासन/डीजल चालित) का प्रयोग हो रहा था परन्तु अनियमित (किरासन/ डीजल) आपूर्ति के कारण यह अधिक कारगर नहीं थे । वहीं जिले के केवल कुछ ही स्थानों पर पम्प सेटों (किरासन/डीजल चालित) का प्रयोग होता था । निर्मित लिफ्ट सिंचाई योजना में जन सहभागिता का अभाव था । डीजल चालित लिफ्ट सिंचाई अपने अत्यधिक लागत एवं रख-रखाव की समुचित व्यवस्था के अभाव में अलाभकारी साबित हो रहे थे, जिसमें भारी मशीन एवं लोहे के पाईप के अवरोध के कारण अत्यधिक डीजल खपत होता था । व्यक्तिगत सिंचाई कूप एंव पम्पसेट यद्यपि सफल थे परन्तु लागत अधिक आता था । फलस्वरूप अभी तक एक एकड़ व्यवस्था हेतु ३०,०००/- रू० पूँजीगत व्यय करना पड़ता था । कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का मूल आधार सिंचाई क्रांति ही हो सकता था । अतः परतर भूमि विकास परियोजना के अन्तर्गत कार्यारम्भ किया गया ।

कार्य का प्रबंधन :-

परती भूमि विकास परियोजना के तहत जन सहभागिता एवं अंशदान के साथ जल उपभोक्ता समिति के माध्यम से सिंचाई योजना की स्थापना को एक अभियान के रूप में में प्रारम्भ किया गया । परियोजना के सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र से सभी कृषकों को जल उपभोक्ता समिति का सदस्य बनाया गया तथा उनके स्थानीय ज्ञान के मद्द से स्थलों का चयन किया गया । सभी सदस्यों द्वारा प्रत्येक योजना में कुछ लागत तथा श्रम के रूप में अंशदान लगाया गया जो समिति के सदस्यों की योजना में रूचि एवं स्वामित्व एहसास को जाहिर करने के लिए आवश्यक था । योजना पूूर्ण होने के पश्चात् इस समिति द्वारा सिंचाई सुविधा हेतु प्रति घंटा शुल्क के रूप जमा करने की व्यवस्था की गई । इससे सृजित निधि द्वारा प्रत्येक सिंचाई स्कीम के संचालन एवं आवश्यक रख-रखाव की व्यवस्था सुनिश्चित किया गया । जल उपभोक्ता समिति द्वारा अपने साप्ताहिक बैठक में योजना के बेहतर लाभ की कार्य योजना, दायित्व की हिस्सेदारी, लेखा संधारण व्यवस्था तथा अन्य प्रासंगिक समस्याओं पर चर्चा कर समाधान निकालना प्रारम्भ किया गया है । इसके लिए योजना क्रियान्वयन से पूर्व ही खण्ड विकास विभाग के माध्यम से लाभुकों को आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया है ।

उपलब्धि :-

उक्त सामुदायिक व्यवस्था के तहत् कई सिंचाई योजनाओं की स्वीकृति दी गई ताकि चेक डेम, कच्चे एवम् पक्के तालाबों के माध्यम् से संग्रहित जल को खेतों तक पहुॅंचाया जा सके ।

सफलता के कुछ दृष्टान्त

लघु जलागम का नाम	:	भौंठ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	नागनी नाला में क्रेट कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० **50,000/-** रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० **50,000/-** रूपये

विवरण :- नागनी नाला में क्रेट वर्क वर्ष 2006 में करवाया गया । इस कार्य पर कुल लागत मु० 50,000/- रूपये आई तथा दोनों तरफ से उपजाऊ जमीन जो नाला होने के कारण बह रही थी लगभग 15 बीघा जमीन का भुमि कटाव हो रहा था वह इस कार्य के पूर्ण होने के उपरान्त रूक गया ।

कार्य से लाभ :-

1. 15 से 20 बीघा जमीन काकटाव थम गया ।
2. उपजाऊ जमीन का कटाव रूक गया ।
3. जो नाला लगभग 20 फुट तक गहरा हो चुका था व उसमें बजरी व कंकड़ इत्यादि भर चुके थे जिससे नाले की गहराई 10 से 20 फुट तक ऊपर आ गई है ।

लाभार्थी समूह :- पृथि सिंह, केहर सिंह, करनैल सिंह, विशम्भर, रोशन

लघु जलागम का नाम	:	भौंठ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	खोडणू में भू-संरक्षण कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० 50,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 60,000/- रूपये

विवरण :- खोडणू में भू-संरक्षण का कार्य वर्ष 2006 में करवाया गया तथा इससे लगभग 20 बीघा जमीन जो कटाव के कारण बह रही थी फायदा हुआ । नाला गहरा होने से रूक गया है । इसके बीच में छोटे-2 चैक डैम बनाने से नाले की गहराई कम हुई है व भू-कटाव का खतरा कम हुआ है ।

लाभार्थी समूह :- करनैल सिंह

विशम्भर

जोजू राम

सुनीत सिंह

रमेश चंद

लघु जलागम का नाम	:	भौंठ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव छण्डी में रास्ते का निर्माण
स्वीकृत राशि	:	मु० 25,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० **25,000/-** रूपये

विवरण :- यह रास्ता जलागम समिति भौंठ द्वारा वर्ष 2004 में बनवाया गया । इससे पहले बरसात के मौसम में इस रास्ते में चलने-फिरने में कठिनाईयां आती थी परन्तु अब रास्ते के निर्माण होने के बाद चलने-फिरने में आसानी हो गई है ।

लाभार्थी समूह :- दलीप सिंह, अतुल सिंह, जैसी राम, चमन सिंह ।

लघु जलागम का नाम	:	भौंठ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव सुंहार में बावली का निर्माण
स्वीकृत राशि	:	मु० 27,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 27,000/- रूपये

विवरण :- यह कार्य को जलागम समिति भौंठ द्वारा वर्ष 2001-02 में गांव सुंहार में किया गया था । इस पर कुल लागत मु० 27,000/- रूपये आई है । इस बावली का पानी सर्दियों में गर्म व गर्मीयों में ठण्डा रहता है । पूर्व में इस बावली का पानी आस-पास की गंदगी के कारण पीने के योग्य नहीं रहता था परन्तु अब इस बावली के बनने से पीने के पानी की समस्या ठीक हो गई है ।

लाभार्थी समूह :- धनिया राम, राणो देवी, चरण दास, मदन, शिबो राम ।

लघु जलागम का नाम : भौंठ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम : गांव छण्डी में Gulley Plugging का कार्य
स्वीकृत राशि : मु० 30,000/- रूपये
खर्च की गई राशि : मु० 30,000/- रूपये

विवरण :- यह कार्य को जलागम समिति भौंठ द्वारा वर्ष 2006 में गांव छण्डी के नज़दीक करवाया गया था । इस कार्य के पूर्ण हाने पर 20 से 25 बीघा जमीन बहने से रूक गई तथा जो नाली मिट्टी के कटाव के कारण गहरी होगई थी वह भी मलबे से भर गई है जिसकी वजह से लाभार्थी समूह का रेत, बजरी ईकट्ठा करने का साधन भी गन गया है ।

लाभार्थी समूह :- सोम दत्त, मदन लाल, देवराज, उत्तम चंद ।

लघु जलागम का नाम	:	भौंठ (IWDP-IV)
कार्य का नाम	:	कृषि विकास के अन्तर्गत अदरक बीजाई का कार्य

विवरण :- स्वयं सहायता समूह "किसान शक्ति" द्वारा गांव जालटू में वर्ष, 2007 में अदरक का बीज अपने-2 खेतों में लगवाया गया । इस समूह के द्वारा कुल 2007 क्विंटल अदरक का बीज केवल 1 बीघा क्षेत्र में बोया गया जिसकी निराई व गुड़ाई भी इसी समूह के सदस्यों द्वारा स्वयं की गई । अब उक्त खेतों से लगभग 7 क्विंटल अदरक प्राप्त होने की उम्मीद है जिससे इस समूह को लगभग 20,000/- से 22,000/- रूपये की आमदनी होने के आसार बन गए हैं ।

लाभार्थी समूह :- जोगिन्द्र कुमार, पूर्ण चंद, शमशेर ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव भंग्यां में बावली का निर्माण
स्वीकृत राशि	:	मु० 15,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 15,000/- रूपये

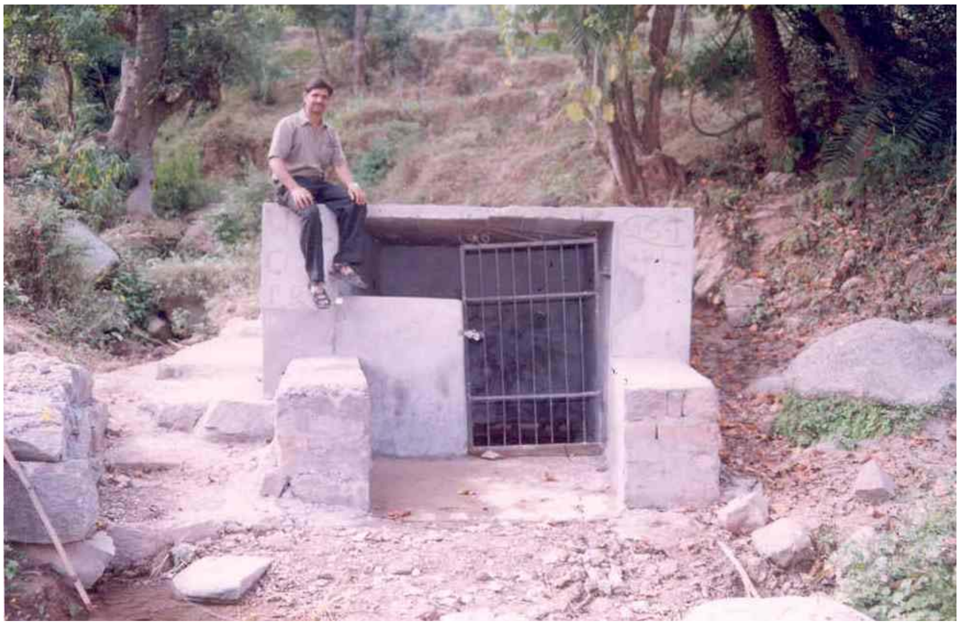

विवरण :- इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2002 के अक्तूबर माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी जिसे समिति ने बावली का निर्माण करके गांव भंगेई को पीने के पानी की सुविधा देकर गांव वासियों को लाभान्वित किया है । गांव में इस प्रकार की पहले कोई सुविधा नहीं थी क्योंकि उक्त क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति जटिल क्षेत्र होने से इस प्रकार की सुविधा से वंचित था । अतः जलागम समिति ने बावली का निर्माण कार्य करके इस क्षेत्र के वासियों से सराहना प्राप्त की है ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव भटेड़ में कच्चे रास्ते का कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० 27,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 27,000/- रूपये

विवरण :- इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2002 के अक्तूबर माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी जिसे समिति ने कच्चे रास्ते का निर्माण कार्य भटेड़ जो कि 300 मीटर लम्बा और 1 मीटर चौड़ा है की सुविध भटेड़ वासियों को प्रदान की है । इस कार्य के पूर्ण होने से लगभग 150 प्राणियों को रास्ते की सुविधा प्राप्त हुई है । सभी गांववासी इस कार्य से खुशी महसूस कर रहे हैं । उन्होंने जलागम समिति का आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	राजकीय प्राथमिक पाठशाला भंग्यां में रिटेनिंग दीवार का कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० 40,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 40,000/- रूपये

विवरण :- इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2003 के दिसम्बर माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी जिसे समिति ने राजकीय प्राथमिक पाठशाला भंग्यां में रिटेनिंग दीवार का कार्य कच्चे रास्ते का निर्माण कार्य आरम्भ किया । इस कार्य से लगभग 7 हैक्ट० भूमि की सुरक्षा हुई है तथा 10 लोगों को 236 दिन का रोजगार प्राप्त हुआ है । इससे स्कूल के बच्चे तथा अध्यापक काफी खुश हैं । उन्होंने जलागम समिति का काफी आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम : बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम : गांव लाहड़ू में क्रेट का कार्य
स्वीकृत राशि : मु० 43,000/- रूपये
खर्च की गई राशि : मु० 42,774/- रूपये

विवरण :- गांव लाहड़ू में बरसात के मौसम में पानी खेतों में घुस जाता था जिससे सारे कंकड़ व पत्थर इत्यादि खेतों में बह कर आ जाते थे व खेतों का काफी नुकसान उठाना पड़ता था । खेतों की बगल में जलागम समिति ने क्रेट का कार्य करवाने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया ताकि बरसात के पानी द्वारा होने वाले नुकसान से खेतों को बचाया जा सके । इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2001 के दिसम्बर माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी । जिस पर समिति ने गांव लाहड़ू में क्रेट का निर्माण कार्य आरम्भ किया । इस कार्य में 6 बड़े-2 क्रेट लगवाए गए । इस कार्य से लगभग 7 हैक्ट० भूमि की सुरक्षा हुई है तथा 13 लोगों को 250 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ है । उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव डडामण में क्रेट का कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० 43,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 40,000/- रूपये

विवरण :- बरसात के मौसम में गांव डडामण में नाले का पानी काफी तेजी से लोगों के घरों व खेतों में नुकसान करता था । इस पर जलागम समिति ने क्रेट का कार्य करवाने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया ताकि बरसात के पानी द्वारा होने वाले नुकसान से लोगों के घरों व खेतों को बचाया जा सके । इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2005 के मार्च माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी । जिस पर समिति ने गांव डडामण के नाले में क्रेट का निर्माण कार्य आरम्भ किया । इस कार्य में 6 बड़े-2 क्रेट लगवाए गए । इस कार्य से लगभग 7 हैक्ट० भूमि की सुरक्षा हुई है तथा 8 लोगों को 220 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ है । उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव लाहडू में चैक डैम का कार्य
स्वीकृत राशि	:	मु० 13,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 13,000/- रूपये

विवरण :- बरसात के दिनों में गांव लाहडू में नाले का पानी काफी तेजी से आने से भूमि का कटाव हो रहा था जिससे लोगों के खेतों में भी कटाव शुरू हो चुका था। इस पर जलागम समिति ने चैक डैम परती भूमि विकास परियोजना में से बनवाने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया ताकि बरसात के दिनों में तेजी से बहने वाले पानी के द्वारा होने वाले नुकसान से भूमि कटाव को रोका जा सके। इस कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2005 के मार्च माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली थी । जिस पर समिति ने गांव लाहडू के नाले में चैक डैम का निर्माण कार्य आरम्भ किया । इस कार्य से लगभग 7 हैक्ट० भूमि की सुरक्षा हुई है तथा 4 लोगों को 48 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ है । उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का बहुत ज्यादा आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	:	बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव सकलाह में फलदार पौधों का पौधरोपण
स्वीकृत राशि	:	मु० 28,280/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 28,280/- रूपये

विवरण :- जलागम समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव सकलाह जहां का वातावरण फलदार पौधों के लिए बहुत ज्यादा अनुकूल है अतः वहां पर फलदार पौधों का रोपण स्वीकृति हेतु खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय में भेजा तथा इस हेतु कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2006 के जून माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली । इस कार्य में 2 हैक्ट० भूमि पर फलदार पौधों का रोपण स्थानीय निवासियों के द्वारा करवाया गया जिससे 11 स्थानीय लोगों को फलदार पौधों के साथ-साथ 209 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ । उपभोक्ता समूह इस कार्य से काफी खुश है क्योंकि आने वाले समय में यह फलदार पौधे उन्हें अलग-2 तरह के फल देंगे । उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का बहुत ज्यादा आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम : बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम : गांव पीर बाग में फलदार पौधों का पौधरोपण
स्वीकृत राशि : मु० 14,490/- रूपये
खर्च की गई राशि : मु० 14,497/- रूपये

विवरण :- जलागम समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव पीर बाग जहां का वातावरण फलदार पौधों के लिए बहुत ज्यादा अनुकूल है अतः वहां पर फलदार पौधों का रोपण स्वीकृति हेतु खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय में भेजा तथा इस हेतु कार्य को करवाने की मंजूरी जलागम समिति बलाना को वर्ष 2006 के जून माह में विकास खण्ड अधिकारी कार्यालय से मिली । इस कार्य में 1 हैक्ट० भूमि पर फलदार पौधों का रोपण स्थानीय निवासियों के द्वारा करवाया गया जिससे 10 स्थानीय लोगों को फलदार पौधों के साथ-साथ 102 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ । उपभोक्ता समूह इस कार्य से काफी खुश है क्योंकि आने वाले समय में यह फलदार पौधे उन्हें अलग-2 तरह के फल देंगे इसके लिए उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का बहुत ज्यादा आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	: बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	: गांव सकलाह में वानिकी कार्य
स्वीकृत राशि	: मु० 22,474/- रूपये
खर्च की गई राशि	: मु० 22,465/- रूपये

विवरण :- जलागम समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव सकलाह में पत्तीदार पौधों को लगाया जाना चाहिए ताकि आने वाले दिनों में जहां लोगों को उन पौधों से पशुओं के लिए हरा चारा तथा औषधियों को बनाने के लिए जड़ी-बूटियां प्राप्त हो सकेंगी । अतः वहां पर वानिकी के पौधों के रोपण हेतु स्वीकृति खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय से जलागम समिति बलाना को वर्ष 2006 के जून माह में मिली । इस कार्य में 1-5 हैक्ट० भूमि पर पत्तीदार पौधों का रोपण स्थानीय निवासियों के द्वारा करवाया गया जिससे 14 स्थानीय लोगों को पत्तीदार पौधों के साथ-साथ 186 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ । उपभोक्ता समूह इस कार्य से काफी खुश है क्योंकि आने वाले समय में यह पत्तीदार पौधों से उनके पशुओं के चारे की समस्या हल होगी वहीं उन्हें औषधियों को बनाने के लिए जड़ी-बूटियां प्राप्त हो सकेंगी । इसके लिए उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का बहुत ज्यादा आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम : बलाना **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम : गांव खोली में वानिकी कार्य
स्वीकृत राशि : मु० 27,917/- रूपये
खर्च की गई राशि : मु० 27,854/- रूपये

विवरण :- जलागम समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव खोली में पत्तीदार पौधों को लगाया जाना चाहिए ताकि आने वाले दिनों में जहां लोगों को उन पौधों से पशुओं के लिए हरा चारा तथा औषधियों को बनाने के लिए जड़ी-बूटियां प्राप्त हो सकेंगी । अतः वहां पर वानिकी के पौधों के रोपण हेतु स्वीकृति खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय से जलागम समिति बलाना को वर्ष 2006 के जून माह में मिली । इस कार्य में 1-5 हैक्ट० भूमि पर पत्तीदार पौधों का रोपण स्थानीय निवासियों के द्वारा करवाया गया जिससे 13 स्थानीय लोगों को पत्तीदार पौधों के साथ-साथ 239 दिनों का रोजगार प्राप्त हुआ । उपभोक्ता समूह इस कार्य से काफी खुश है क्योंकि आने वाले समय में यह पत्तीदार पौधों से उनके पशुओं के चारे की समस्या हल होगी वहीं उन्हें औषधियों को बनाने के लिए जड़ी-बूटियां प्राप्त हो सकेंगी । इसके लिए उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति का बहुत ज्यादा आभार प्रकट किया है ।

लघु जलागम का नाम	:	गोला **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम	:	गांव कुहाली में बावली का निर्माण
स्वीकृत राशि	:	मु० 15,000/- रूपये
खर्च की गई राशि	:	मु० 14,966/- रूपये

विवरण :- गांव कुहाली में लोगों का पीने का पानी काफी दूरी से लाना पड़ता था जिससे घर की महिलाओं का अधिकांश समय पानी लाने में ही व्यतीत होता था । अतः जलागम समिति की बैठक के दौरान समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव कुहाली में बावली का निर्माण जलागम विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत करवाया जाना अत्यन्त अनिवार्य है ताकि महिलाओं को घर के नज़दीक ही पीने का पानी उपलब्ध करवाया जा सके । इस कार्य को करवाने हेतु स्वीकृति खण्ड विकास अधिकारी, चुवाड़ी के द्वारा जून, 2001 में प्राप्त हुई थी । इस कार्य को लगभग 15 परिवारों के उपभोक्ता समूह ने जलागम समिति की देखरेख में स्वयं पूरा करवाया । इस बावली के निर्माण से 15 परिवारों को स्वच्छ पीने का पानी उपलब्ध हो रहा है जिससे इन परिवारों की पीने के पानी की समस्या का काफी हद तक निदान हो गया है ।

लघु जलागम का नाम : गोला **(IWDP-IV)**

कार्य का नाम : मंसूई नाले में चैक डैम का निर्माण

स्वीकृत राशि : मु० 60,000/- रूपये

खर्च की गई राशि : मु० 59,995/- रूपये

विवरण :- ग्राम पंचायत गोला के मंसुई नाले में बरसात के दिनों में बाढ़ के कारण गांव की खेती योग्य जमीन का कटाव हो जाता था जिससे गांव वासियों को नुकसान हो रहा था व नाला गहरा तथा छोटा होता जा रहा था। इस कार्य का प्रस्ताव ग्राम पंचायत गोला ने ग्राम सभा से पारित करवा करके खण्ड विकास अधिकारी को स्वीकृति हेतु भेजा जहां से स्वीकृति मिलने के पश्चात् इस कार्य को उपभोक्ता समूह ने स्वयं करवाया । इस कार्य को करवाने की विशेषता यह रही कि बरसात के समय पानी का बहाव कम हो गया जिससे भूमि कटाव रूक गया । साथ ही नाले में बजरी व रेत भी ईकट्ठी होनी शुरू हो गई जिससे स्थानीय लोगों को फायदा हो रहा है ।

लघु जलागम का नाम : टिकरीगढ़ **(IWDP-IV)**
कार्य का नाम : गांव सुकोई में सिंचाई टैंक का निर्माण
विकास खण्ड : तीसा
जिला : चम्बा

विवरण :- विकास खण्ड तीसा की सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है, कृषि के लिए पानी महत्वपूर्ण अवयव होता है, यदि किसान को फसल सिंचाई हेतु समय पर आवश्यकतानुसार पानी उपलब्ध हो जाए तो फसल उत्पादन में वृद्धि स्वयंमेव हो जाती है तथा किसान पानी की एक–एक बूँद का हिसाब रखने लगता है, जिसका उदाहरण टिकरीगढ़ पंचायत के सुकोई गांव में सिंचाई टैंक से प्राप्त किया जा सकता है ।

चम्बा जिले की टिकरीगढ़ पंचायत के ग्राम सुकोई में लोगों को कृषि हेतु सिंचाई की सुविधा नहीं थी । विकास खण्ड तीसा की टिकरीगढ़ ग्राम पंचायत में हरियाली परियोजना के अन्तर्गत एक सिंचाई हेतु टेंक का प्रस्ताव रखा गया । सम्पूर्ण विकास खण्ड तीसा पिछड़े क्षेत्र से सम्बन्धित है । गांव में अधिकतर अनुसूचित जाति के लोग निवास करते हैं, इन गरीब किसानों के पास स्वयं की इतनी पूंजी नहीं थी कि अन्य माध्यम से गांव में सिंचाई हेतु जल पहुंचा सके । जिसके कारण वे वर्षा के पानी पर आश्रित थे । परन्तु सिंचाई हेतु पानी की कमी उन्हें खलती जरूर थी । वर्ष 2008 में पंचायत द्वारा निर्णय लेकर हरियाली परियोजना के अन्तर्गत सिंचाई योग्य स्त्रोतों के चयन का विषेष अभियान चलाया गया अभियान के दौरान ग्रामीणों ने उस क्षेत्र के जल संग्रहण विकास दल (डब्ल्यू0डी0टी0) के सदस्य के समक्ष सिंचाई टेंक हेतु एक प्रस्ताव रखा बी.डी.ओ. द्वारा गांव वालों को सिंचाई क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले कृषकों को संगठित कर समूह गठित करने की सलाह दी गयी। ग्रामीणों ने अपना समूह बनाकर सर्वसम्मति से ग्राम पंचायत प्रधान को अध्यक्ष

निर्वाचित कर लिया । इसके बाद बी.डी.ओ. ने हरियाली परियोजना के तहत सिंचाई टैंक योजना का प्रकरण बनवाया जिसे तुरन्त ही अनुमोदन हेतु ग्राम सभा में पारित करवाकर कार्य को आरम्भ करवाया गया ।

टैंक निर्माण पूर्ण होने के पश्चात् यहां के गरीब किसानों की मानों जिन्दगी ही बदल गई है । अब उन्हें बेमौसमी सब्जी के उत्पादन करने में वर्षा पर निर्भर नहीं होना पड़ता है । लोग अब बेमौसमी सब्जी का उत्पादन कर अपनी जीविका कमा रहे हैं । इसके अतिरिक्त हरियाली परियोजना के अन्तर्गत और भी गरीब किसानों की जीविकोपार्जन हेतु कई कार्य करवाए या किए जा रहे हैं जिससे गरीब किसानों की आथिर्की में भी सुधार हुआ है । पानी की समस्या सुलझतें ही किसानों ने पानी एकत्र करके अपने खेतों में पानी पहुंचा दिया । विकास खण्ड में पंचायती राज के कई अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा योजनाओं के संचालन की जानकारी लेने हेतु दौरा किया गया तो सिंचाई टैंक योजना के समूह के अध्यक्ष ने बताया कि साहब यहां के लोगों की किस्मत ही बदल गयी है । अब हम सब आपसी निर्णय के आधार पर इसका संचालन करते हैं तथा आवश्यकतानुसार अपने खेतों में पानी पहुंचाते हैं ।

इस योजना के प्रारम्भ हो जाने से समूह के सदस्यों की 10.4 हेक्टेयर जमीन सिंचित हो रही है तथा पहले जहां किसान मक्की या गेहूं की फसल लेते थे वहीं आज बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में लबे हुए हैं । आवश्यकता से अधिक पानी रहने पर दूसरे खेतों की सिंचाई कर अतिरिक्त आय अर्जित कर लेते हैं । किसानों का कहना है कि “इस वर्ष हमने दुगुनी फसल का उत्पादन किया गया है । यह प्रथम वर्ष था जो हम सदस्यों के लिए नया अनुभव था । अब हम सब किसानों को प्रकृति की वर्षा पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, हमारे उपयोग के लिए पर्याप्त पानी है ।

लघु जलागम का नाम : मंगली (IWDP-IV)
कार्य का नाम : गांव चंदरेई में सिंचाई टैंक का निर्माण
विकास खण्ड : तीसा
जिला : चम्बा

विवरण :– ग्राम पंचायत मंगली विकास खण्ड तीसा की सबसे दुर्गम पंचायतों में से एक है । यहां के लोगों की सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है । साल के 5–6 महीने यहां बर्फ रहती है फिर भी पानी की कमी के कारण यहां के किसान सालभर में केवल एक ही फसल बोते थे कृषि के लिए पानी महत्वपूर्ण अवयव होता है । मंगली ग्राम पंचायत में हरियाली परियोजना के अन्तर्गत एक सिंचाई हेतु टैंक का प्रस्ताव रखा गया । गांव में अधिकतर लोग गरीब परिवारों (बी0पी0एल0) से सम्बन्धित हैं । इन गरीब किसानों के पास स्वयं की इतनी पूंजी नहीं थी कि अन्य माध्यमों से गांव में सिंचाई हेतु जल पहुंचा सके । जिसके कारण वे वर्षा के पानी पर आश्रित थे । परन्तु सिंचाई हेतु पानी की कमी उन्हें खलती जरूर थी । वर्ष 2008 में पंचायत द्वारा निर्णय लेकर हरियाली परियोजना के अन्तर्गत सिंचाई योग्य स्त्रोतों के चयन का विषेष अभियान चलाया गया अभियान के दौरान ग्रामीणों ने उस क्षेत्र के जल संग्रहण विकास दल (डब्ल्यू0डी0टी0) के सदस्य के समक्ष सिंचाई टेंक हेतु एक प्रस्ताव रखा बी.डी.ओ. द्वारा गांव वालों को सिंचाई क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले कृषकों को संगठित कर समूह गठित करने की सलाह दी गयी। ग्रामीणों ने अपना समूह बनाकर सर्वसम्मति से ग्राम पंचायत प्रधान को अध्यक्ष निर्वाचित कर लिया । इसके बाद बी.डी.ओ. ने हरियाली परियोजना के तहत सिंचाई

टैंक योजना का प्रकरण बनवाया जिसे तुरन्त ही अनुमोदन हेतु ग्राम सभा में पारित करवाकर कार्य को आरम्भ करवाया गया ।

टैंक निर्माण पूर्ण होने के पश्चात् यहां के गरीब किसानों की मानों जिन्दगी ही बदल गई है । अब उन्हें बेमौसमी सब्जी खासकर आलू व मटर के उत्पादन करने में वर्षा पर निर्भर नहीं होना पड़ता है । लोग अब उन्नत किस्म के आलू व मटर सब्जी का उत्पादन कर अपनी जीविका कमा रहे हैं । इसके अतिरिक्त हरियाली परियोजना के अन्तर्गत और भी गरीब किसानों की जीविकापार्जन हेतु कई कार्य करवाए या किए जा रहे हैं जिससे गरीब किसानों की आथिर्की में भी सुधार हुआ है । पानी की समस्या सुलझतें ही किसानों ने पानी एकत्र करके अपने खेतों में पानी पहुंचा दिया । विकास खण्ड में पंचायती राज के कई अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा योजनाओं के संचालन की जानकारी लेने हेतु दौरा किया गया तो सिंचाई टैंक योजना के समूह के अध्यक्ष ने बताया कि साहब यहां के लोगों की किस्मत ही बदल गयी है । अब हम सब आपसी निर्णय के आधार पर इसका संचालन करते हैं तथा आवश्यकतानुसार अपने खेतों में पानी पहुंचाते हैं ।

इस योजना के प्रारम्भ हो जाने से समूह के सदस्यों की 3 हेक्टेयर जमीन सिंचित हो रही है तथा पहले जहां किसान मक्की या गेहूं की फसल लेते थे वहीं आज आलू व मटर की सब्जियों के उत्पादन में लगे हुए हैं । आवश्यकता से अधिक पानी रहने पर दूसरे खेतों की सिंचाई कर अतिरिक्त आय अर्जित कर लेते हैं ।

लघु जलागम का नाम : मंगली (IWDP-IV)
कार्य का नाम : गांव कड़कला में प्रोटैक्शन कार्य
विकास खण्ड : तीसा
जिला : चम्बा

विवरण :- विकास खण्ड तीसा में हरियाली परियोजना के अन्तर्गत करवाए गए कार्यों से वहां के स्थानीय लोगों को काफी फायदा हो रहा है । एक तो लोगों को घर के नज़दीक कार्य उपलब्ध होने के कारण रोजगार उपलब्ध हुआ है दूसरे ईलाके में विकास कार्यों की एक लहर सी चल पड़ी है । मंगली गांम पंचायत के लोगों के लिए हरियाली परियोजना एक वरदान की तरह साबित हो रही है जिसका जीता जागता उदाहरण ग्राम पंचायत मंगली के कड़कला घोड़ी स्थान में डंगे लगवाकर लोगों की उपजाऊ जमीन पर लगे सेब के बागीचे को बहने से रोकना है । उक्त योजना से उस गांव के लगभग सात परिवार लाभान्वित हुए हैं और लगभग 3 हैक्टेयर जमीन को बारिश में बहने से बचाया गया है ।

लघु जलागम का नाम : कुठेड़ (IWDP- VI)
कार्य का नाम : गांव कुठेड़ में सिंचाई कूहल का निर्माण
विकास खण्ड : चम्बा
जिला : चम्बा

विवरण :- ग्राम पंचायत कुठेड़ के अन्तर्गत गांव मथरेड़ नामक स्थान पर हरियाली परियोजना के तहत एक सिंचाई कुहल का निर्माण करवाया गया । इस स्थान पर सिंचाई कूहल के निर्माण होने से पहले कृषि से सम्बन्धित कार्यों के लिए गांव के स्थानीय किसानों को अपनी फसलों के लिए मौसमी वर्षा व प्रकृति की मेहरबानी पर निर्भर होना पड़ता था क्योंकि इस गांव में सिंचाई का कोई भी साधन न होने के कारण आम गरीब किसान काफी हताश व निराश हो चुके थे और वह अपनी एकमात्र जीविका का साधन कृषि होने के कारण वर्षा पर निर्भर थे एवम् समय पर वर्षा न होने के कारण अकसर उनकी फसलें बर्बाद हो जाया करती थी क्योंकि हिमाचल प्रदेश के अधिकतर क्षेत्रों में वर्ष में मात्र एक ही फसल होती है और वह भी सिंचाई की उचित व्यवस्था न होने के कारण नष्ट हो जाए तो आम जिन्दगी एवम् परिवार का वर्ष भर भरण–पोषण करना एक निर्धन किसान के लिए कितना मुश्किल हो सकता है, इस बात की कल्पना मात्र से ही सिहरन होने लगती है ।

अब इस गांव में सिंचाई कूहल का निर्माण होने से तस्वीर का रूख काफी बदल गया है । जहां कूहल निर्माण से गांव की उपजाऊ मिट्टी को जीवनदान मिल गया है वहीं किसान परिवारों के चेहरे पर हर्ष की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है । अब आम किसान भरपूर फसल होने के कारण जहां अपने परिवार का भरण–पोषण अच्छी तरह से करने लगा है वहीं अतिरिक्त फसल को बाज़ार में बेचकर अपनी आर्थिक दशा को भी मजबूत कर लिया है । निर्माण की गई सिंचाई कूहल अब उनकी भाग्य की रेखा बन गई है । किसानों के चेहरों पर एक प्रश्न अक्सर दिखाई देता है कि अगर वे पहले ही इस योजना के सम्बन्ध में जागरूक हो गए होते और कूहल निर्माण वर्षों पहले ही करवा दिया होता तो इतने समय में उनको इस अभाव भरी जिन्दगी से निजात मिल गई होती ।

निःसन्देह कूहल निर्माण ने इस गांव की भाग्य रेखा बदलने के साथ ही एक चेतना व क्रान्ति का संचार किया है और साथ लगे क्षेत्र के लोगों ने भी इस उदाहरण से सबक लेकर अपने–2 क्षेत्र की तकदीर को बदलने के लिए प्रयास प्रारम्भ कर दिए हैं और वह दिन अब दूर नहीं जब हर क्षेत्र में कूहल निर्माण होगा और देश व प्रदेश की कृषि सम्बन्धी स्थिति में एक अविश्वसनीय परिवर्तन होगा ।

लघु जलागम का नाम : कन्दला (IWDP-VI)
कार्य का नाम : जुल्हा नाला में चैक डैम का निर्माण
विकास खण्ड : चम्बा
जिला : चम्बा

भारत सरकार द्वारा स्वीकृत हरियाली परियोजना के अन्तर्गत ग्राम पंचायत कन्दला को चुना गया है । इस परियोजना के अन्तर्गत इस पंचायत में पांच वर्ष में कुल 40 लाख रूपये खर्च करने का प्रावधान रखा गया है और गांव की आवश्यकताओं को गांव में ही पूरा किया जा सके, इस परियोजना के अन्तर्गत किए गए कार्य की सफलता की कहानी सिंचाई कूहल तथा चैक डेम का निर्माण करवाया गया है । इस गांव में कुल 15–20 परिवार हैं और लगभग 250 बीघा कृषि योग्य भूमि है । यहां गांव के किनारे में उपजाऊ भूमि का काफी मात्रा में कटाव हो रहा था । अतः इस परियोजना के अन्तर्गत इस गांव में चैक डेम का निर्माण करवाया गया है ताकि गांव में हो रहे मृदा कटाव को रोका जा सके । इस विकास योजना का मुख्य उद्धेश्य गांव और गांव के लोगों का विकास करना है । इस गांव के लोगों के अच्छे सहयोग और जारूकता से यह कार्य सम्भव हो सका है । अतः हमें आशा है कि इस पंचायत के दूसरे गांवों के लोग इससे प्रेरणा लेते हुए इस परियोजना में बढ़चढ़ कर भाग लें । गांव के लोगों का उत्साह देखते हुए यह इस गांव के हर परिवार को 50–50 चारे से सम्बन्धित पौधे बांटे गए हैं ताकि उन्हें अपने पशुओं को प्रर्याप्त मात्रा में चारा और ईंधन के लिए लकड़ी प्राप्त हो सके ।